कहानियाँ सुनाने के माध्यम से मूल्यों की तालीम | मेरे अनुभव

इमान शर्मा

क्या आपको याद है कि बचपन में कहानियाँ सुनना हमें कितना पसन्द था? परिवार में हमारा पसन्दीदा व्यक्ति वह हुआ करता था जो हमें मज़ेदार कहानियाँ सुनाता था। हमारे पसन्दीदा शिक्षक वे थे जो हमें ऐसी कहानियाँ सुनाते थे जो हमारी पाठ्यपुस्तकों के पन्नों के बाहर होती थीं। बचपन में हम भले ही कितने भी चंचल क्यों न रहे हों, कहानियों को सुनने और एक अलग दुनिया में भटकने के लिए हम घण्टों बैठ सकते थे। ऐसा लगता था जैसे कहानियाँ हमें सम्भावनाओं की नई दुनिया में ले जाएँगी।

कहानी सुनाने का मक़सद क्या था? हमारी व्यापक रुचियों और निरन्तर खोजी मन को बाँधे रखने के अलावा घर के बड़े लोग हमें कुछ मूल्य भी देना चाहते थे। इस वजह से उनकी अधिकांश कहानियों में नैतिक सबक़ होते थे, जो अक्सर कहानी के अन्त में स्पष्ट रूप से कहे जाते थे।

इन दिनों सीखने की प्रक्रिया में कहानियों ने महत्त्वपूर्ण स्थान हासिल कर लिया है। कहानी सुनाना न केवल भाषाओं बल्कि सभी विषयों को पढ़ाने के लिए एक प्रभावकारी शैक्षणिक तकनीक के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है, विशेषकर स्कूल के शुरुआती वर्षों में। कहानियों के माध्यम से बच्चे सुनना, समझना, कल्पना करना, अलग-अलग दृष्टिकोण समझना और इतिहास, संस्कृतियों व अवधारणाओं का विश्लेषण व मूल्यांकन करना सीखते हैं। वे अभिव्यक्ति, सामंजस्य, प्रस्तुति, स्वर, आवाज़ का उतार-चढ़ाव, वाक्य संरचना, वाक्यांश, मुहावरे, बोलचाल की शैली और दूसरे कई भाषायी कौशल विकसित करते हैं।

कहानी सुनाने का एक और निर्विवाद पहलू यह भी है कि यह छोटे बच्चों में मूल्यों को विकसित करने का एक रचनात्मक तरीक़ा है। एक कहानी सुनते समय बच्चे अपने विवेक और अनुभव का उपयोग करके किसी स्थिति और/ या किसी क़िरदार का आकलन करते हैं और अपने मूल्यों को व इस समझ को विकसित करते हैं कि क्या अच्छा है और क्या बुरा; क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। जिज्ञासु श्रोताओं के रूप में, वे विभिन्न स्थितियों पर अपने दृष्टिकोण विकसित करते हैं। वे कहानियों के क़िरदारों के साथ संसार भर में और अलग-अलग समय में भ्रमण करते हैं, उन्हें अपने जीवन एवं अनुभव की वास्तविकता से जोड़ते हैं। यहाँ तक कि बहुत छोटे बच्चे भी कहानियों, क़िरदारों और उनकी दुनिया से जुड़ाव बना सकते हैं, जैसा कि हम सब भी अपने बचपन में किया करते थे।

मेरे अनुभव और सीख

मैं स्कूलों में बच्चों को कहानियों के माध्यम से अपना विषय, अँग्रेज़ी भाषा पढ़ाती थी, अब मुझे समझ में आता है कि मैं किस तरह उनके साथ और अधिक व्यक्तिगत स्तर पर जुड़ पाती थी। कहानी सुनाने के ज़रिए मैं उन बच्चों से भी बात कर सकी जो शर्मीले और अन्तर्मुखी थे। इससे उनको इतनी सहजता महसूस होती थी कि वे अपनी बात खुलकर रख सकें बिना यह चिन्ता किए कि उनके बारे में क्या राय बनाई जाएगी। जब भी मैं उनसे सवाल पूछती थी कि अगर वे कहानी में एक ख़ास क़िरदार होते तो क्या करते और क्यों, तब वे ऐसे विचार साझा करते थे जो मुझे विस्मित कर देते थे। इन विचारों ने मुझे उनके जीवन, उनकी पहचान, उनके मन और उनके परिवार और घरों में झाँकने का मौक़ा दिया।

मूल्यों को अपनाना

कई बार मैं जानबूझकर कोई नकारात्मक तर्क देती थी। लेकिन बच्चे मेरे बारे में कोई राय बनाने की बजाय क्या सही है और क्या ग़लत है वाले सवालों के सबसे तर्कसंगत जवाब देते थे और बताते थे कि उन्हें ऐसा क्यों लगा। इसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या कहानी सुनाना एक वास्तविक स्थिति को जीने जैसा नहीं है, इतना कि व्यक्ति को यह साफ़ दिखने लगे कि क्या सही है और क्या नहीं? और क्या बच्चों को इस बात का एहसास कराने के लिए इससे बेहतर कोई तरीक़ा है, जिससे कहानियों की 'नैतिक शिक्षा' के जवाबों को यांत्रिक रूप से रटने की बजाय वे बुनियादी मूल्यों को स्वाभाविक रूप से विकसित कर सकें? कहानियों के माध्यम से जीवन के बारे में सीखने से बच्चे बेहतर विकल्प चुन पाएँगे जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं।

भलाई का मूल्यबोध

कहानी कहने के सत्र के बाद बच्चों से पूछे जाने वाले सवालों

में मेरा प्रिय सवाल होता है, "तुम्हारा पसन्दीदा क़िरदार कौन-सा है?" बच्चे हमेशा सबसे अच्छा चुनाव करते हैं। वे किसी क़िरदार और परिस्थिति का विश्लेषण करने में माहिर होते हैं। मैंने ऐसा कभी नहीं देखा कि किसी बच्चे ने कोई नकारात्मक क़िरदार पसन्द किया हो। हमेशा भला क़िरदार ही सबकी पसन्द होता है। इससे मुझे पता चला कि बच्चों का झुकाव स्वाभाविक रूप से भलाई की ओर होता है और उनमें इसे परखने की क्षमता होती है। हम शिक्षक के रूप में केवल उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं। बच्चे चाहे कितने ही शरारती क्यों न हों, वे हमेशा भले क़िरदार को ही चुनते हैं, जो यह बार-बार साबित करता है कि बच्चे अच्छाई के मूल्यों को समझते हैं।

दूसरों के बारे में राय न बनाना

एक बार मैं लगभग 8-10 बच्चों की कक्षा में एक ऐसी लड़की के बारे में कहानी सुना रही थी जिसे मछली खाना पसन्द था। कक्षा के ज़्यादातर बच्चे शाकाहारी थे, मुझे नहीं पता था कि वे कैसी प्रतिक्रिया देंगे। बच्चे थोड़े बड़े भी थे, 9-10 साल के। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि केवल दो या तीन बच्चों ने ही वैसी प्रतिक्रिया दी जैसी मुझे अपेक्षा थी। बाक़ी बच्चे लड़की के मछली खाने की बात से सहज थे। उनमें से कुछ ने तो यह भी बताया कि वे भी मांसाहारी हैं और मछली, चिकन और अण्डे खाना उन्हें पसन्द है। जहाँ तक मुझे ठीक से याद है, उनके शब्द थे, "आप जो भी खाना चाहते हैं खा सकते हैं। खाने की पसन्द के आधार पर हम यह नहीं कह सकते हैं कि कोई व्यक्ति अच्छा है या बुरा।" बच्चे इतने समझदार हो सकते हैं यह देखकर मैं हैरान थी। मैंने उन्हें बताया कि मैं भी मांसाहारी हूँ। कहानी और चर्चा के अन्त में, सभी बच्चे इस बात पर सहमत थे कि खान-पान की आदतें किसी व्यक्ति को परिभाषित नहीं करती हैं। इस प्रकार, उस दिन कहानी सुनाने से इन बच्चों को सहिष्णुता और स्वीकार्यता के एक निश्चित स्तर तक पहुँचने में मदद मिली। मैंने सीखा कि कहानियाँ बच्चों को हमारे सामाजिक मानदण्डों से परे जाकर सोचने में मदद करने के लिए बेहतरीन माध्यम हो सकती हैं और वे हमें किसी दूसरे के नज़रिए से दुनिया को देखने का मौक़ा देती हैं।

छोटे बच्चों को कहानी सुनाने की सबसे मज़ेदार बात मेरे लिए यह थी कि वे कहानी, कथानक या पात्रों के बारे में अपनी ख़ुद की समझ तक कैसे पहुँचते थे। वे अपने मूल्यों का निर्माण ख़ुद करते थे। वे अपने विचारों से उलझन भी महसूस करते थे और इन उलझनों के वक़्त, सही जवाब ज़्यादातर उनके साथियों के पास होते थे न कि मेरे पास।

निष्कर्ष

कहानी सुनाने के विभिन्न तरीक़ों और सामग्रियों के इस्तेमाल से कहानी सुनाना और भी अधिक दिलचस्प बनाया जा सकता है, जैसे कि कठपुतलियाँ, कहानी कार्ड, किताबें (बड़ी किताबें, सचित्र किताबें आदि), बड़ी तस्वीरें, भूमिका निर्वाह, बच्चों द्वारा बनाए गए रेखाचित्र, वीडियो आदि। अनुभव जितना समृद्ध होगा, प्रभाव उतना ही गहरा होगा। जब बच्चे कहानियाँ सुनाते हैं, तो उनकी झिझक दूर होती है, उनमें बोलने और अपने विचारों को व्यक्त करने का आत्मविश्वास भी बढ़ जाता है। इस तरह, कहानियों के ज़रिए बच्चों को सोचने और अपने आपको अभिव्यक्त करने का तरीक़ा मिल जाता है और उन्हें चुनाव करने का भी मौक़ा मिलता है (कहानी के अन्त को बदलकर, पसन्दीदा क़िरदार या हिस्से का चयन करके)। इससे वे अच्छे श्रोता और सृजनात्मक संवाद करने वाले भी बनते हैं। ये सारे हुनर 21वीं सदी में जीवन के लिए ज़रूरी हैं। और जैसा कि मैंने अपने अनुभवों के माध्यम से देखा है, कहानियाँ

चित्र-1 : *कहानी सुनाने के लिए बच्चे छड़ी वाली कठपुतलियों का उपयोग करते हुए, चित्तौड़गढ़,राजस्थान में।*

बच्चों में बुनियादी मूल्य विकसित करने के लिए एक नैसर्गिक साधन का काम करती हैं।

बुनियादी चरण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ़-एफ़एस) 2022 में पाँच विकासात्मक क्षेत्रों का उल्लेख किया गया है : (i) शारीरिक विकास (ii) सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास (iii) संज्ञानात्मक विकास (iv) भाषा और साक्षरता विकास (v) सौन्दर्य और सांस्कृतिक विकास। विकास के इन सभी क्षेत्रों को कहानी सुनाने के माध्यम से काफ़ी लाभ मिल सकता है। एनसीएफ़-एफ़एस 'नैतिकता, मूल्यों और स्वभाव' के बारे में भी बात करता है और जैसा कि पहले कहा गया है, कहानी सुनाना इन्हें नैसर्गिक रूप से विकसित करने का एक प्रभावी साधन है। यह स्पष्ट है कि कहानियों के आधार पर बच्चों के लिए सीखने का एक सर्वांगीण अनुभव तैयार किया जा सकता है और अब वह समय आ गया है कि बतौर शिक्षक हम अपनी कक्षाओं में कहानी सुनाने की गतिविधि का और अधिक प्रयोग करें।

References

Dash, D. (2015). Effectiveness of Storytelling Approach in Inculcating Values Identified by NCERT among the 6th Grade Learners of Odisha State. *Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 51(3)*, 2583-2590

Gunawardena, M. & Brown, B. (2021). Fostering Values Through Authentic Storytelling. *Australian Journal of Teacher Education, 46 (6)*

Koivulu, M., Turja, L. & Laakso, M.-L. (2020). Using the Storytelling Method to Hear Children's Perspectives and Promote Their Social-Emotional Competence. *Journal of Early Intervention, 42(2)*, 163-181

National Curriculum Framework for Foundational Stage (2022)

Taylor, E., Taylor, P. C. & Hill, J. (2018). *Ethical Dilemma Story Pedagogy – A Constructivist Approach to Values Learning and Ethical Understanding*. Paper presented at Proceedings of the Science and Mathematics International Conference (SMIC)

इमान शर्मा अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के स्कूल ऑफ़ कंटीन्यूइंग एजुकेशन और यूनिवर्सिटी रिसोर्स सेंटर में फैकल्टी हैं। वे गुवाहाटी, असम में रहती हैं। उनके कार्य क्षेत्र में अँग्रेज़ी, प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) और बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) शामिल हैं। उन्होंने कॉटन कॉलेज से अँग्रेज़ी ऑनर्स में स्नातक और तेज़पुर विश्वविद्यालय से भाषा विज्ञान और लुप्तप्राय भाषाओं में स्नातकोत्तर किया है। उनसे *iman.sharma@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : विजय सेन **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

इन आरम्भिक चरणों के दौरान अध्यापकों के लिए यह सुनिश्चित करना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है कि बच्चे जिन चीज़ों से परिचित हैं उन्हें सुनें, देखें और पढ़ें। एक उदाहरण के तौर पर, कक्षा में जो कुछ कहानी के रूप में पढ़ा जा रहा हो, उसे उन बातों को भी सहारा देना चाहिए जिन पर सर्कल टाइम या छोटे-छोटे समूह संवादों के दौरान चर्चा हो रही हो।

- शरून सनी, भाषा सीखने में कहानियों का प्रभाव, पेज 61